कुमार विकल की कविता

अंग-संग

मेरे अंग-संग रहो
मेरे प्रियजन जनो!
मेरी हिफ़ाज़त करो
मुझे इस समय तुम्हारी इतनी जरूरत है
जितनी युद्ध में सिपाही को
अपने हथियार को होती है।
दुश्मन नयी साजिशें चल रहा है
हमारे साथियों को
छोटे-छोटे लालचों से
अपने पक्ष में कर रहा है।

मेरे प्यारे कामरेड, रामाचल!
आ, तू अपनी पूरी
जमात के साथ आ
मेरी ढाल बन
मेरे अंग-संग चल
इन कमज़ोर क्षणों में
तू मुझे दे इतना बल
कि भूल जाऊं मैं
उन दोस्तों का छल
जो कर गये हैं हमसे घात
और छोड़ा है
उस समय हमारा साथ
जब शब्द ठीक काम करने लगे थे
और शब्दों की ताक़त से
हम ठीक हथियार गढ़ने लगे थे।

कामरेड रामाचल,
शब्द और हथियार का इस्तेमाल
हज़ारों कंठों
लाखों हाथों की मांग करता है
इसलिए साथियों के
छूट जाने का भाव
एक जख्म तो करता है।

आओ
हम अपने-अपने जख़्म
एक दूसरे को दिखायें/सहलायें
लेकिन इन्हें अपनी
जमात से बिल्कुल न छिपायें
मरहम तो आखिर
जमात ही लगायेगी
एक मां की तरह
आंसुओं को पोंछेगी
दुलरायेगी
और फ़िर पीठ ठोंक कर
हमारी शक्ति को बढ़ायेगी।

कृष्णपाल का 9 सीटें जीतने का सपना हुआ फ़्लॉप

फ़रीदाबाद । फ़रीदाबाद संसदीय क्षेत्र की सभी नो विधासभा क्षेत्रों में चकोने मुकाबला है हालाकि सतही स्तर पर चुनावी मुकाबला कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी और इंडियन नेशनल लोकदल में नज़र आता है पर बहुजन समाज पार्टी आधे से ज्यादा क्षेत्रों में चुनावी मुकाबले पर है। बसपा इन तीनों ही पार्टियों का समीकरण और राजनीतिक उलटफेर करने का सक्षम है।

हरियाणा जनहित पार्टी और हरियाणा जनचेतना पार्टी गठबंधन के अलावा हरियाणा लोकहित पार्टी के उम्मीदबार भी चुनाव में ताल ठोंक रहे हैं। यह दीगर है कि इन पार्टियों के उम्मीदबार विधानसभा क्षेत्रों में जाति आधार पर कांग्रेस और भाजपा को हल्का नुकसान पहुंचा सकते हैं।

संसदीय क्षेत्र में भाजपा उम्मीदबार केवल और केवल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम के सहारे चुनावी बैतरणी पार करना चाहते हैं। कांग्रेस को तीन राज्यों में हुए उपचुनाव में मिली सफलता के बाद पार्टी के उम्मीदबारों के हौंसले बुलंद है। विकास के नाम पर और मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा की भले मानसी के सहारे चुनाव फतह करना चाहते हैं। इनेलो, सुप्रीमो ओम प्रकाश चौटाला के विधानसभा चुनाव प्रचार में उतरने के बाद इनेलो उम्मीदबारों के हौंसले बुलंद हुए हैं।

हजका, सुप्रीमो कुलदीप बिश्नोई को भाजपा से गठबंधन टूटने के बाद ना सहानुभूती मिली है ना विधानसभा क्षेत्रों के लिये मजबूत उमीदबार मिले हैं। हजका मात्र दस विधानसभा क्षेत्रों में चुनावी मुकाबले में नजर आ रही है। इसमें कुलदीप बिशनोई समेत उनके कुनबे की चार सीटों पर चुनावी टक्कर हो सकती है। हरियाणा लोकहित पार्टी के सुप्रीमो गोपाल कांडा खुद सिरसा विधानसभा क्षेत्र में इनेलो, कांग्रेस और भाजपा के चक्रब्यूह में फंस गये। हरियाणा जनचेतना पार्टी के सुप्रीमो विनोद शर्मा अम्बाला से चोकोने मुकाबले में फंस गये हैं। जोड़-तोड़ के मामले में माहिर माने जाने वाले विनोद शर्मा चुनावी समर से अपनी नैया पार लगाने के लिये किन-किन पतवारों का ही सहारा लेते हैं यह नतीजे बतायेंगे। हालॉकि हजका हजपा गठबंधन और हरियाणा लोकहित पार्टी विधानसभा चुनाव में अपनी मजबूत मौजूदगी बताने और दिखाने के लिये पूरी ताकत लगा रही है पर ये सभी पार्टियां पांच से आठ विधानसभा क्षेत्रों में अपनी उम्मीदवार जीता ले जायें वही इनके लिये बड़ी उपलब्धि होगी। हाल-फिलहाल इनकी हालत पतली है।

तिकोने मुकाबले में फंसी कांग्रेस भाजपा और इनेलो से टक्कर ले रही है। कांग्रेस को 90 विधानसभा क्षेत्रों में तीन दर्जन क्षेत्रों में भारतीय जनता पार्टी जबरदस्त टक्कर दे रही है। भाजपा इन क्षेत्रों में पार्टी की नीतियों की वजह से नहीं मजबूत उम्मीदवार के चलते कांग्रेस के सामने चुनौती पेश कर रही है। शहरों में सीमटी भाजपा ने ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपनी दखल बढाइ है। इनेलो पहली बार हरियाणा में दूसरे राज्यों और दूसरे राजनीतिक दलों के नेताओं को हरियाणा में अपने पक्ष में प्रचार करने के लिये बुला रही है। जो इनेलो सुप्रीमो प्रदेश में ताऊ देवी लाल के अलावा किसी के नाम लेने और सुनने को तैयार नहीं थे। वही चौटाला अपनी साख बचाने के लिये जनता दल यूनाइटेड के अध्यक्ष शरद यादव, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और समाजवादी पार्टी सुप्रीमो मुलायम सिंह यादव ही मान-मनौवल कर पार्टी के पक्ष में प्रचार करने के लिये बुला रहे हैं। इनेलो प्रदेश में करीब 40 सीटों पर कांग्रेस से सीधे मुकाबले पर है। मौजूदा हालात में कांग्रेस मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा की अगवाई में 75 सीटों पर कड़े मुकाबले में है। कांग्रेस के 15 से 20 उम्मीदबार चुनावी मुकाबले से बाहर है।

बहु कोणीय मुकाबले में फ़ंसी राजनीतिक पार्टियों के उम्मीदबार पूरी ताकत झोंक रहे हैं। इस बार विधानसभा चुनाव में मूलभूत सुविधायें जनहित की योजनाएं गौण हो चली है और जात-पात और आरोप-प्रत्यारोप के दौर शुरू हो गया है। बहुजन समाजपार्टी कछुआ चाल से अपना चुनावी अभियान चला रही है। बसपा के उम्मीदवारों को कमतर आंकने वाली पार्टियां नुकसान उठा सकती हैं। बसपा हरियाणा में एक दर्जन विधान सभा क्षेत्रों में उल्ट-फेर करने की स्थिति में है।

मुद्दा है केवल लूट के लिए सत्ता पाना

फ़रीदाबाद । हरियाणा विधासभा चुनाव में राजनीतिक पार्टियां मुद्दों की बात करने की बजाय मतदाता को भ्रमित और गुमराह कर रही है। भाजपा और इनेलो लोग़ों को बहकाने में एक दूसरे को मात दे रहे हैं। भाजपा ने मतदाताओं को लुभावने सुनहरे सपने दिखाकर आम चुनाव की बड़ी जीत दर्ज की थी। इसी तर्ज पर अब ये पार्टियां हरियाणा विधानसभा चुनाव अपने बूते पर फ़तह करना चाहते हैं।

इनेलो, सुप्रीमो ओमप्रकाश चौटाला अपने शासन काल 1999-2005 में हुए विकास कार्यों पर वोट मांग रहे हैं। हालाकि जनता ने 2005 में हुए विधानसभा चुनाव में ही चौटाला और उनकी पार्टी को पूरी तरह नकार दिया था। इनेलो 2005 विधानसभा चुनाव में 90 विधानसभा हल्कों में से नौ सीटों पर ही सिमट कर रह गई थी। जनता ने चौटाला का शासन काल का जवाब दे दिया था। इसके बाद 2009 में हुए विधानसभा चुनाव में इनेलो और अकालीदल गठबंधन को 31 विधानसभा सीटों पर जीत मिली थी। यह जीत भी इनेलो के उपलब्धियों पर नहीं बल्कि कांग्रेस के बदनाम विधायकों को सबक सीखाने के लिये जनता ने चौटाला के उम्मीदवारों को जीताया था।

चौटाला चुनाव प्रचार में खुद को और अपनी पार्टी को त्याग की मूर्ति के तौर पर पेश कर रहे हैं। 1989 में ताऊ देवी लाल को संसदीय दल का नेता चुने जाने पर उन्होंने अपनी पगड़ी वी पी सिंह के सर पर रख दी थी। हालाकि संसदीय दल की बैठक से पहले यह तय हो गया था कि देवीलाल को औपचारिक तौर पर संसदीय दल का नेता चुना जायेगा और देवी लाल इस जिम्मेवारी को वी पी सिंह को सौंप देंगे। बहुत कम लोग़ों को मालूम है कि उस समय वी पी सिंह को रोकने के लिये पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर और ओमप्रकाश चौटाला ने मिलकर जोड़-तोड़ से देवीलाल के पक्ष में नव निर्वाचित सांसदों को लामबंद करने का असफल प्रयास किया था। अब इनेलो और चौटाला पिछले 25 सालों से जनता दल के इस रणनीति को त्याग और बलिदान का नाम देकर लोग़ों को गुमराह कर रहे हैं।

चौटाला और उनकी पार्टी का भ्रम अब लोग़ों में खतम हो चला है। ताऊ देवीलाल की मौत के बाद इनेलो का जनाधार लगातार सिमटता जा रहा है। इनेलो सुप्रीमो ओमप्रकाश चौटाला और उनके बड़े बेटे और पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव अजय सिंह चौटाला को शिक्षक भर्ती मामले में दस साल की कैद होने से पार्टी का जनाधार पूरी तरह बिखर गया है। मुट्ठी भर बेरोजगार और लफंडर किस्म के युवाओं को गुमराह कर इनेलो अपना नए सीरे से जनाधार पाने का प्रयास कर रहे हैं। हालाकि अभी आय से अधिक संपत्ति के मामले में अदालत का फ़ैसला आना बाकी है। जयललीता को आय से अधिक संपत्ति के मुकदमें में 4 साल की सज़ा होने पर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री का पद गवाना पड़ा है। चौटाला परिवार इस फैसले के बाद अंदर से काफ़ी घबराया हुआ है और येन-केन प्रकारेन सत्ता हथियाना चाहते है। अदलतों में हालाकि सत्ता की ताकत का कोई असर नहीं होता पर फिर भी चौटाला परिवार सत्ता की ताकत के जरिये बचना चाहते है।

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।